OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 12

नैतिक मूल्यों से आता है अहिंसा का भाव - न्यायमूर्ति

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं नैतिक मूल्यों के समावेश से ही समाज में अहिंसा का भाव जागृत हो सकता है। इसके लिए सबसे पहले हमें स्वयं में परिवर्तन लाना बहुत ज़रूरी है। उक्त विचार देश के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, पी.सी.घोष ने गुड़गाँव, बोहड़ा कलां, ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर के 14वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर इन्टरपैथ विषय पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमें पहले स्वयं के ही अंदर देखना है कि मेरे में क्या है, जब हम स्वयं के भीतर के गुणों को महसूस करते हैं तो परिवर्तन आसानी से होता है।

संस्कारों का निर्माण होगा मातृशक्ति के सम्मान से

महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज, हरि मंदिर आश्रम, पटौदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि उन्होंने कहा कि अगर हमें समाज को अहिंसक बनाना है तो इसके लिए हिंसा की प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाले मूल को ही नष्ट करना होगा।सबसे पहले हमारे समाज में मातृशक्ति का सम्मान होना चाहिए, जिससे कि बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा हों। सारे विश्व में अगर प्राणी मात्र का

इन्टरपैथ विषय सेमिनार का आयोजन

भला किसी ने चाहा तो वो भारत ही है, सर्वे भवंतु सुखिनः ये हमारा एक संदेश है। डॉ.लोकेश मुनि, अहिंसा विश्व भारती, आचार्य लोकेश आश्रम ने कहा कि वास्तव में आज हिंसा एक बहुत बड़ी समस्या है, इसका समाधान तभी हो सकता है जब हम प्रारंभ से ही शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा पर ज़ोर देंगे। आज परमार्थ का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है। हमें स्वार्थ से ऊपर उठना होगा।

ई. आइ. मालेकर,प्रीस्ट ने कहा कि समाज को अहिंसक बनाने के लिए हमें महिलाओं पर किए जा रहे अत्याचारों को रोकना होगा। परमात्मा ने मानव को अपनी छवि में बनाया है, जो गुण परमात्मा में हैं वही गुण मानव के अंदर हैं। जिन्हें पुनः जागृत करने की आवश्यकता है। हैदराबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं अनुसूचित जाति आयोग के चेयरपर्सन वी. ईश्वरैय्या ने कहा कि जब से मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया, मेरे जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया। उन्होंने कहा कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, बल्कि वो तो परमधाम का रहवासी है, परमात्मा हम मनुष्यों के सदृश्य जन्म नहीं लेता। परमात्मा परकाया प्रवेश करके हम मनुष्यात्माओं को ज्ञान देते हैं। वर्तमान समय ये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय परमात्मा द्वारा दी जा रही शिक्षाओं से मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए कार्य कर रहें है। महामण्डलेश्वर स्वामी

सर्वानंद सरस्वती, महाशक्तिपीठ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं काफी समय से ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हूँ, ये एक ऐसी संस्था है जो सिर्फ देना जानती है। हिंसामुक्त समाज के लिए सबसे पहले आहार की शुद्धि बहुत ज़रूरी है, आहार से ही हमारे व्यवहार का निर्माण होता है, वाणी में मिठास आती है। हिमाचल प्रदेश से आये चेमगन केन्टिग ताइ सितुपा ने कहा कि अहिंसक समाज के निर्माण में दया, विनम्रता एवं मधुरता जैसे गुण बहुत ज़रूरी हैं। उन्होंने कहा कि अहिंसक समाज की स्थापना के लिए शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिकता का समावेश बहुत ज़रूरी है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रबंधन बहुत ही उच्च स्तरीय कार्य कर रहा है, जिसमें कोई संदेह व दिखावा नहीं है।रामकृष्ण मिशन से आये सुनील कुमार ने कहा कि हमारा ये समाज हिंसा से मुक्त था, ये तो हमारे इतिहास में भी वर्णन है, जिस रामराज्य की हम कल्पना करते हैं वो एक ऐसा ही समाज रहा है। डॉ. ए.के.मर्चेंट, लोटस मंदिर के नेशनल ट्रस्टी ने कहा कि अहिंसक समाज के निर्माण के लिए हमारे विचारों में मौलिक परिवर्तन ज़रूरी है। ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने बताया कि परमात्मा के सिवाय इस संसार को हिंसामुक्त कोई नहीं बना सकता। उन्होंने कहा कि जब परमात्मा ने सृष्टि रची तो वो सम्पूर्ण अहिंसक थी जिसे हम स्वर्ग कहते हैं, जहाँ के बारे में गायन है कि शेर और बकरी दोनों एक ही घाट पर जल पीते थे। लेकिन धीरे-धीरे वो समय बदल गया और ये समाज हिंसा प्रधान हो गया। इसका मूल कारण आत्मिक स्वरूप की विस्मृति होने के कारण मानव देह-अभिमान वश हिंसा उसके जीवन का एक हिस्सा बन गई। उन्होंने कहा कि हिंसा सिर्फ किसी को मार देना ही नहीं बल्कि काम वासना के वश होकर जब मनुष्य कुकृत्य करता है, वो भी हिंसा है।

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं न्यायाधीश पी.सी.घोष तथा वी. ईश्वरैय्या।

जहां होता मन साफ, वहां होता ईश्वर का वास

कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल मृदुला सिन्हा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शोभा।

पणजी (गोवा)। घर-आंगन के साथ मन व बुद्धि की स्वच्छता भी होनी चाहिए। स्वच्छ मन में ही सभी के लिए शुभ भावना रहती है और वहाँ पर ईश्वर का वास भी होता है। ये विचार पणजी की राज्यपाल महामहिम मृदुला सिन्हा ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'स्वच्छ भारत अभियान' के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अपने हाथों पर काबू रखें और गंदगी को दूर करें। राज्यपाल के साथ ब्रह्माकुमारीज़ ने स्वच्छता के लिए झाड़ू हाथ में लेकर स्वच्छ भारत मुहिम की शुरुआत की। श्रीमती सिन्हा ने कहा कि छोटे-बड़े सभी में स्वच्छता के विषय पर जागृति आ रही है यह बहुत अच्छी बात है। बाह्य स्वच्छता के साथ साथ सकारात्मक चिंतन, सकारात्मक व्यवहार ज़रूरी है।पणजी की ब्र.कु. शोभा ने कहा कि स्वच्छ भारत की कल्पना को साकार करके भारत को विश्वगुरू बनाने के स्वप्न को साकार करने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के 'स्वच्छ भारत अभियान' में ब्रह्माकुमारीज़ के युवकों द्वारा मदद मिली है। अगर मन भी स्वच्छ होगा तो इस धरती पर स्वर्णिम भारत का निर्माण होगा। इस अवसर पर राज्यपाल ने सभी से प्रतिज्ञा करायी कि हफ्ते में कम से कम दो घंटे सफाई कार्य के लिए देंगे व दूसरों को भी इसमें शामिल करने की प्रेरणा देंगे।

निंदा करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता: दादी

अहमदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ के कांकरिया स्थित सुख-शान्ति भवन का उद्घाटन उत्साह एवम् उमंग भरे वातावरण में हुआ। संस्था की 99 वर्षीय मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने फुटबॉल मैदान में उमड़े जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में स्थायी सुख-शांति प्राप्त करने के लिए अवगुणों से मुक्ति पाकर गुणवान बनना होगा। किसी की निंदा करने वाला या दुख देने वाला व्यक्ति कभी सुख-शांति प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चा इंसान जो सभी को सम्मान देता है, वही भगवान के गले का हार बनता है। कड़वा बोलना सबसे बड़ा अवगुण है। इसलिए जीवन में मधुरता धारण करके स्वयं सुखी हों और दूसरों को सुखी बनाएं। उन्होंने कहा कि सरला बहन द्वारा रोपित पौधा अब वटवृक्ष बन चुका है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि प्राचीन भारत की गरिमा बहाल करने के लिए किये - शेष पेज 8पर

दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के साथ केक कटिंग करते हुए ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. करसन भाई व अन्य।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,** Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15-dec-2014
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।